A Multidisciplinary and Multilingual Double-Blind Peer-Reviewed
International Research Journal
TRIPURI

शैव-परम्परा और भारतीय चित्रकला : आध्यात्मिक एवं धार्मिक अभिव्यक्ति का एक दृश्य स्वरूप

अंकित पाण्डेय[1] (शोधछात्र)[1]
डॉ. सुष्मिता नंदी[2] (विभागाध्यक्षा)[2]
भारतीय चित्रकला विभाग
सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय, सांची
सम्पर्क सूत्र- 9696150900 Email: ankitxry@gmail.com

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17562875

शोध सारांश

भारतीय चित्रकला में शैव-परम्परा की गहरी छाप देखी जाती है। भारतीय चित्रकला आध्यात्मिकता, धार्मिक आस्था और सांस्कृतिक मूल्यों को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम रही है। प्राचीन भित्तिचित्रों, लघुचित्रों और मंदिरों की मूर्तिकला में शिव और उनसे संबंधित प्रतीकों का व्यापक चित्रण मिलता है। अजंता-एलोरा की गुफाओं, एलिफेंटा की गुफाओं, चोल कालीन मंदिरों, पहाड़ी और राजस्थानी चित्रशैलियों में शैव-दर्शन के तत्त्व स्पष्ट रूप से परिलक्षित होते हैं। नटराज, अर्धनारीश्वर, कैलाश पर्वत, योगी शिव तथा तांडव नृत्य जैसे विविध रूपों के माध्यम से भारतीय कलाकारों ने शैव-परम्परा की गूढ़ दार्शनिक अवधारणाओं को मूर्त रूप दिया है। शैव-परम्परा न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक स्तर पर, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों में भी चित्रकला के माध्यम से विकसित हुई है। विभिन्न कालखंडों में पल्लव, चोल, चालुक्य और राजपूत राजाओं के संरक्षण में शैव चित्रकला और मूर्तिकला का विशेष रूप से विकास हुआ।

इसके अतिरिक्त, कांगड़ा, बसोहली और मेवाड़ शैली की लघु-चित्रकला में शिव-पार्वती, शिव-विवाह, गंगा अवतरण और शिव के विभिन्न रूपों को विशेष रूप से दर्शाया गया है। यह शोध पत्र भारतीय चित्रकला में शैव प्रतीकों, धार्मिक आख्यानों और उनके आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक अर्थों की व्यापक व्याख्या करता है, जिससे शैव-परम्परा के विभिन्न पक्षों को सम्यक् समझने में सहायता मिलती है।

मुख्य शब्द- शैव-परम्परा, भारतीय चित्रकला, भित्तिचित्र, लघुचित्र, मंदिर मूर्तिकला, नटराज, अर्धनारीश्वर, तांडव नृत्य, कैलाश पर्वत, शिव-पार्वती, गंगा अवतरण, धार्मिक प्रतीक, शैव दर्शन, चोल कला, कांगड़ा शैली।

भूमिका

भारतीय कला और संस्कृति में शैव-परम्परा का महत्वपूर्ण स्थान है। शिव न केवल आध्यात्मिक चेतना के प्रतीक हैं, बल्कि भारतीय चित्रकला में उनकी व्यापक अभिव्यक्ति देखी जाती है। चित्रकला के माध्यम से शैव-परम्परा के धार्मिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक पक्षों को अभिव्यक्त किया गया है। प्राचीन भित्तिचित्रों, लघुचित्रों और मंदिरों की मूर्तिकला में शिव और उनसे संबंधित प्रतीकों का व्यापक चित्रण मिलता है।

शैव-परम्परा और भारतीय चित्रकला का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

भारतीय चित्रकला की प्राचीनता वैदिक काल तक जाती है, जहां चित्रण का उद्देश्य धार्मिक अभिव्यक्ति और आध्यात्मिक चेतना को जागृत करना था। भारतीय कला और संस्कृति में शैव-परम्परा का गहरा प्रभाव रहा है। शिव की आराधना प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक विभिन्न कलात्मक रूपों में होती आई है। भारतीय चित्रकला, विशेषकर भित्तिचित्र, लघुचित्र, मूर्तिशिल्प, और मंदिर चित्रांकन के माध्यम से शैव-परम्परा को दर्शाया गया है। शैव-परम्परा से संबंधित चित्रकला के प्रमुख साक्ष्य निम्नलिखित स्रोतों में मिलते हैं-

* **गुप्तकाल (4वीं - 6वीं शताब्दी)-** गुप्तकाल को भारतीय कला का स्वर्णयुग कहा जाता है, जिसमें शैव भक्ति और चित्रकला का अभूतपूर्व विकास हुआ। उदाहरण- अजंता गुफाएँ (महाराष्ट्र) इन भित्तिचित्रों में शिव-पार्वती और नटराज का भव्य चित्रण मिलता है। एलोरा की गुफाएँ – कैलाशनाथ मंदिर की मूर्तिकला और भित्तिचित्र शैव भक्ति को दर्शाते हैं।
* **चोल काल (9वीं - 13वीं शताब्दी)-** दक्षिण भारतीय शैव चित्रकला चोल वंश के शासकों ने शैव-परम्परा को बढ़ावा दिया और इसे कला के माध्यम से व्यक्त किया। उदाहरण- चिदंबरम नटराज मंदिर (तमिलनाडु)– इस मंदिर की दीवारों पर शिव के नटराज रूप को चित्रित किया गया है। तंजावुर चित्रकला में शिव को राजसी भव्यता के साथ चित्रित किया गया है।
* **मध्यकालीन लघुचित्र परम्परा (16वीं - 18वीं शताब्दी)-** इस काल में पहाड़ी, राजस्थानी, और मुगलकालीन चित्रशैलियों में शैव-परम्परा का अद्भुत चित्रण हुआ। शैव चित्रकला का विस्तार काल भी कहा जा सकता है। उदाहरण- कांगड़ा चित्रशैली – इसमें शिव-पार्वती विवाह, कैलाश पर्वत और नटराज के चित्रण मिलते हैं। बसोहली चित्रशैली – यहाँ तांडव करते हुए नटराज का चित्रण विशेष रूप से प्रसिद्ध है।
* **मेवाड़ शैली (17वीं - 19वीं शताब्दी)-** राजस्थान की मेवाड़ शैली में भक्ति रस प्रधान था और इसमें शैव-परम्परा को विशेष रूप से चित्रित किया गया। यह समय भक्ति और चित्रकला का संगम के लिए महत्वपूर्ण रहा है। उदाहरण- शिव-विवाह – मेवाड़ शैली में शिव-पार्वती के विवाह

प्रसंग को अत्यंत भव्यता के साथ चित्रित किया गया। योगी शिव – शिव को ध्यानमग्न अवस्था में दर्शाने वाले कई चित्र मेवाड़ शैली में बनाए गए।

शैव-परम्परा भारतीय चित्रकला में आध्यात्मिकता, भक्ति और रहस्यवाद के रूप में परिलक्षित होती है। अजंता और एलोरा की गुफाओं से लेकर मेवाड़ और कांगड़ा चित्रशैली तक, शैव धर्म और भारतीय चित्रकला का यह समन्वय भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का एक अनमोल हिस्सा बना।

भारतीय चित्रकला में शिव के प्रतीक और उनके चित्रण

शिव भारतीय संस्कृति और धर्म में विविध प्रतीकों के रूप में प्रकट होते हैं। उनकी आराधना और चित्रण कई कलात्मक शैलियों में हुई है, जिसमें भित्तिचित्र, मूर्तिकला, लघुचित्र और मंदिरों की नक्काशी शामिल हैं। शिव के ये प्रतीक आध्यात्मिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक अर्थ रखते हैं।

* **नटराज (तांडव नृत्य)-** नटराज शिव का सबसे प्रसिद्ध रूप है, जो सृजन, विनाश और पुनर्जन्म का प्रतीक है। इसमें शिव को नृत्य मुद्रा में चार या अधिक भुजाओं के साथ दर्शाया जाता है। एक हाथ में **अग्नि** (संहार का प्रतीक), दूसरे हाथ में **डमरू** (सृष्टि का प्रतीक), एक हाथ **अभय मुद्रा** में (सुरक्षा का संकेत), दूसरा हाथ **गज हस्त मुद्रा** में, नीचे राक्षस **अपस्मर** (अज्ञानता) को दबाए हुए हैं। चोल काल की कांस्य मूर्तियाँ और दक्षिण भारतीय मंदिरों की भित्तिचित्रों में **नटराज (तांडव नृत्य)** विशेष स्थान मिला।
* **अर्धनारीश्वर-** यह शिव और पार्वती के संयुक्त स्वरूप को दर्शाता है, जो पुरुष और स्त्री तत्वों की समानता और समरसता का प्रतीक है। शिव का आधा शरीर पुरुष रूप में और आधा स्त्री रूप में चित्रित किया जाता है। एलोरा की गुफाओं में अर्धनारीश्वर की भव्य मूर्तियों में और मध्यकालीन लघुचित्रों में एवं आधुनिक डिजिटल पोस्टरों में **अर्धनारीश्वर** स्वरूप का चित्रण अत्यधिक प्रचलित रहा।
* **कैलाश पर्वत-** शिव का निवास स्थान कैलाश पर्वत को माना जाता है। यह पर्वत शिव की तपस्या, ध्यान और वैराग्य का प्रतीक है। तंजावुर चित्रकला और पहाड़ी चित्रशैली में शिव को कैलाश पर्वत पर ध्यानमग्न स्थिति में दिखाया गया है।
* **शिव-पार्वती-** शिव और पार्वती का संग एक दिव्य युगल का प्रतीक है, जो परिवार, प्रेम और आध्यात्मिक ऊर्जा को दर्शाता है। पहाड़ी और राजस्थानी चित्रशैली में शिव-पार्वती को कैलाश पर बैठे हुए चित्रित किया गया है।
* **शिव-विवाह-** शिव और पार्वती के विवाह का प्रसंग पौराणिक कथा में विशेष स्थान रखता है। यह विवाह शिव के गृहस्थ जीवन में प्रवेश का प्रतीक है। मेवाड़ और कांगड़ा चित्रशैली में **शिव-विवाह** विवाह को अत्यंत भव्यता के साथ दिखाया गया है।

* **नंदी-शिव-** नंदी, शिव के वाहन और परम भक्त हैं। वे भक्ति, निष्ठा और धर्म के प्रतीक माने जाते हैं। दक्षिण भारतीय मंदिरों में नंदी की विशाल प्रतिमाएँ मिलती हैं। तंजावुर और चोलकालीन चित्रों में नंदी को शिव के समीप दर्शाया गया है।
* **योगी शिव-** योगी रूप में शिव ध्यानमग्न और वैराग्यवान संन्यासी के रूप में दर्शाए जाते हैं। वे ज्ञान, शांति और आत्मसाक्षात्कार के प्रतीक हैं। कश्मीर और हिमालयी क्षेत्र की चित्रकला में शिव को गुफाओं में ध्यानमग्न स्थिति में दिखाया गया है। योग परम्परा से जुड़े चित्रों में उन्हें त्रिशूल और कमंडल धारण किए ध्यानावस्था में दर्शाया जाता है।
* **गंगा अवतरण-** गंगा को शिव की जटाओं से प्रकट होते हुए दिखाया जाता है। यह प्रसंग शिव के करुणा और जीवनदाता स्वरूप को दर्शाता है। एलोरा और महाबलीपुरम की नक्काशी में गंगा अवतरण का विस्तृत वर्णन। पहाड़ी और राजस्थानी चित्रशैली में गंगा को शिव की जटाओं से बहते हुए दर्शाया गया है।

शिव के विभिन्न प्रतीकों का चित्रण भारतीय कला और संस्कृति में गहराई से समाहित है। उनकी विभिन्न मुद्राएँ, रूप और प्रतीक भक्ति, शक्ति, ज्ञान और सृष्टि के गूढ़ रहस्यों को प्रकट करते हैं। भारतीय चित्रकला और मूर्तिकला में शिव के यह रूप आध्यात्मिक चेतना को जागृत करने में सहायक सिद्ध होते हैं।

शैव-परम्परा और भक्ति आंदोलन में चित्रकला की भूमिका

भक्ति आंदोलन के दौरान संतों और कलाकारों ने शैव-परम्परा को चित्रकला के माध्यम से जीवंत किया। विशेषकर, नयनार संतों ने शिव भक्ति को लघुचित्र और मंदिरों की दीवारों पर उकेरने की प्रेरणा दी। शैव-परम्परा भारतीय धर्म, कला और संस्कृति का अभिन्न अंग रही है। इस परम्परा के तहत शिव को सर्वोच्च ईश्वर के रूप में माना जाता है, और उनकी आराधना विभिन्न कलात्मक माध्यमों में व्यक्त की गई है। चित्रकला भी ऐसा ही एक प्रमुख माध्यम रही है, जिससे शैव-परम्परा और भक्ति आंदोलन के संदेशों का प्रचार हुआ। शैव-परम्परा में शिव को विभिन्न रूपों में दर्शाया गया है, जिसमें से नटराज, अर्धनारीश्वर, दक्षिणामूर्ति, भैरव आदि। चित्रकला के माध्यम से इन रूपों को जीवंत किया गया, जिससे धार्मिक आस्था को सुदृढ़ किया गया।

गुप्तकाल को भारतीय कला और संस्कृति का स्वर्णयुग कहा जाता है। इस समय शैव धर्म का प्रभाव बढ़ा और चित्रकला में शिव के विविध रूप उकेरे गए। अजंता गुफाएँ (महाराष्ट्र) – यहाँ की भित्तिचित्रों में शिव-पार्वती और नटराज रूप का चित्रण मिलता है। एलोरा गुफाएँ – कैलाशनाथ मंदिर की मूर्तिकला और भित्तिचित्र शैव भक्ति को दर्शाते हैं। चोल राजाओं ने शैव धर्म को बढ़ावा दिया। इस काल की चित्रकला और मूर्तिकला में शिव के तांडव नृत्य, भक्तों के साथ शिव, और अर्धनारीश्वर की छवियाँ उकेरी गईं।

चिदंबरम मंदिर (तमिलनाडु)– यहाँ की भित्तिचित्रों में शिव के विभिन्न स्वरूप चित्रित हैं। राजराजेश्वर मंदिर – यहाँ की चित्रकला में भक्तों के साथ शिव की भक्ति झलकती है। भक्ति आंदोलन (7वीं से 17वीं शताब्दी) के दौरान शैव भक्ति ने गति पकड़ी। इस काल में संतों और भक्तों ने शिव को भक्ति मार्ग का केंद्र बनाया। इस दौरान शैव चित्रकला ने भक्तिपूर्ण स्वरूप प्राप्त किया। पूर्व-मध्यकाल में नयनार संतों ने शिव भक्ति को जन-जन तक पहुँचाया। उनके विचार चित्रकला के माध्यम से व्यक्त किए गए। तंजावुर चित्रकला – इसमें शिव और नयनार संतों के जीवन प्रसंगों को उकेरा गया।

मध्यकालीन लघुचित्र परम्परा (16वीं - 18वीं शताब्दी) में राजस्थानी, पहाड़ी और मुगलकालीन चित्रकला शैलियों में शैव-परम्परा का अद्‌भुत चित्रण मिलता है। कांगड़ा चित्रशैली – शिव-पार्वती के विवाह और कैलाश पर्वत के चित्रण प्रसिद्ध हैं। बसोहली चित्रशैली – यहाँ नटराज और तांडव करते शिव के चित्र मिलते हैं। मेवाड़ शैली की चित्रकला में भक्ति और पौराणिक प्रसंगों का प्रमुख स्थान था। इसमें शिव-पार्वती, नटराज शिव, तथा भस्मासुर वध जैसे शैव प्रसंग चित्रित किए गए। मेवाड़ शैली में शिव का चित्रण भव्य व राजसी परिधान में किया जाता था, जिससे उनका दिव्य स्वरूप उभर कर आता था।

शैव-परम्परा और भक्ति आंदोलन में चित्रकला ने भक्तों को आध्यात्मिक चेतना से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अजंता-एलोरा की भित्तिचित्रों से लेकर पहाड़ी और राजस्थानी चित्रकला तक, शैव भक्ति और कला का यह समन्वय भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का एक अनमोल हिस्सा बना।

आध्यात्मिक एवं धार्मिक उन्नयन में शैव-परम्परा और भारतीय चित्रकला

भारतीय संस्कृति में शैव-परम्परा और चित्रकला का गहरा प्रभाव देखने को मिलता है। शैव-परम्परा केवल धार्मिक आस्था का विषय नहीं रही, बल्कि यह आध्यात्मिक चेतना, ध्यान, योग और भक्ति आंदोलन का भी एक महत्वपूर्ण स्रोत रही है। इस परम्परा को अभिव्यक्त करने में भारतीय चित्रकला ने अहम भूमिका निभाई है।

* **शैव-परम्परा का आध्यात्मिक और धार्मिक योगदान-** शैव-परम्परा का मूल तत्व आत्मा और परमात्मा के संबंध को समझाना है। इस परम्परा में शिव को संहारक और सृजनकर्ता दोनों रूपों में देखा जाता है। नटराज की मुद्रा, अर्धनारीश्वर का स्वरूप और योगी शिव की अवधारणा इस बात को स्पष्ट करते हैं।
* **ध्यान और योग परम्परा में शिव का योगदान-** शिव को आदियोगी और ध्यान के जनक के रूप में जाना जाता है। प्राचीन काल से ही शिव को ध्यान और समाधि की मुद्रा में दर्शाया गया, जो भारतीय योग परम्परा में प्रेरणा का स्रोत बना। **उदाहरण-** कैलाश पर्वत पर ध्यानमग्न शिव की मूर्तियाँ और चित्रण और कश्मीर की शैव-परम्परा, जिसमें शिव को चित्त और आत्मज्ञान का स्रोत माना जाता है।

* **भक्ति आंदोलन में शैव-परम्परा का प्रभाव-** भक्ति आंदोलन (7वीं-17वीं शताब्दी) में शैव संतों ने शिव भक्ति को सरल और व्यापक बनाया। **उदाहरण-** नयनार संतों ने शिव की आराधना को सामाजिक स्तर पर प्रचारित किया। तिरुवल्लुवर और बसवेश्वर जैसे संतों की रचनाएँ, जो भक्ति और सामाजिक सुधार पर केंद्रित थीं।

भारतीय चित्रकला का आध्यात्मिक और धार्मिक योगदान

भारतीय चित्रकला ने शैव-परम्परा के धार्मिक संदेशों को जीवंत बनाने का कार्य किया।

* **भित्तिचित्रों में शैव दर्शन-** प्राचीन मंदिरों और गुफाओं की दीवारों पर चित्रों के माध्यम से शिव के विभिन्न रूपों का प्रदर्शन किया गया। **उदाहरण-** अजंता और एलोरा की गुफाएँ के भित्तिचित्रों में नटराज, अर्धनारीश्वर और शिव-पार्वती के दृश्य और कैलाशनाथ मंदिर (एलोरा) के मूर्तिशिल्प और चित्रकला के माध्यम से शिव की महिमा का चित्रण।
* **मध्यकालीन लघुचित्र परम्परा में शैव भक्ति-** 16वीं-18वीं शताब्दी के दौरान राजस्थानी और पहाड़ी लघुचित्र शैलियों में शैव-परम्परा का विस्तृत चित्रण हुआ। **उदाहरण-** कांगड़ा और बसोहली चित्रशैली में बने शिव-पार्वती के विवाह और कैलाश पर्वत के दृश्य। राजस्थानी (मेवाड़) चित्रशैल – शिव की ध्यान मुद्रा, तांडव नृत्य, और नंदी संग शिव का चित्रण।

शैव-परम्परा और चित्रकला का सामाजिक प्रभाव

शैव-परम्परा और भारतीय चित्रकला ने केवल आध्यात्मिक ही नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन में भी योगदान दिया। जाति और लिंगभेद से ऊपर उठकर भक्ति आंदोलन को प्रेरित किया। लोककला और मंदिर स्थापत्य के माध्यम से जनमानस में धार्मिक चेतना उत्पन्न की। शैव-परम्परा और भारतीय चित्रकला ने मिलकर आध्यात्मिक और धार्मिक उन्नयन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। शैव धर्म की दार्शनिक गहराई और चित्रकला की सुंदरता ने भक्तों और योगियों को एक दिव्य अनुभूति प्रदान

भारतीय चित्रकला में शैव-परम्परा का प्रभाव गहरा और व्यापक है। विभिन्न कालखंडों में विकसित चित्रकला शैलियों में शिव और उनसे संबंधित प्रतीकों को अत्यधिक महत्व दिया गया है। अजंता-एलोरा की गुफाओं से लेकर राजस्थानी, पहाड़ी और चोल कला तक शैव-परम्परा ने चित्रकला को एक आध्यात्मिक स्वरूप प्रदान किया है। यह शोध पत्र शैव-परम्परा और भारतीय चित्रकला के इस गूढ़ संबंध को उजागर करने का प्रयास करता है। की। भारतीय कला और शैव भक्ति की यह परम्परा आज भी धार्मिक और सांस्कृतिक चेतना को जीवंत बनाए हुए है।

संदर्भ सूची-

1. वेदव्यास. (अनुमानित 400-200 ईसा पूर्व). *महाभारत* (भीष्म पर्व – भगवद्गीता).
2. पतंजलि. (अनुमानित 200 ईसा पूर्व). *योगसूत्रम्.*

3. अभिनवगुप्त. (11वीं शताब्दी). *तंत्रालोक*.
4. दंडी. (7वीं शताब्दी). *दशकुमारचरितम्*.
5. तिरुमूलर. (अनुमानित 6वीं शताब्दी). *तिरुमंत्रम्*.
6. बसवेश्वर. (12वीं शताब्दी). *वचन साहित्य*.
7. Chakravarti, M. (2016). *Shaivism in Ancient India: Its History and Evolution*. Oxford University Press.
8. Lorenzen, D. N. (2004). *Religious Movements in South Asia 600-1800*. Oxford University Press.
9. Shulman, D. (1993). *Tamil Temple Myths: Sacrifice and Divine Marriage in South Indian Shaivism*. Princeton University Press.
10. Sanderson, A. (2009). *The Śaiva Age: The Rise and Dominance of Śaivism during the Early Medieval Period*. In E. Franco & I. Ratié (Eds.), *Around Abhinavagupta: Aspects of the Intellectual History of Kashmir*.
11. Coomaraswamy, A. K. (1927). *History of Indian and Indonesian Art*. Harvard University Press.
12. Sivaramamurti, C. (1978). *Nataraja in Art, Thought, and Literature*. National Museum, New Delhi.
13. Goswamy, B. N. (1992). *Pahari Masters: Court Painters of Northern India*. Museum Rietberg Zürich.
14. Welch, S. C. (1985). *Indian Art and Culture*. The Metropolitan Museum of Art.
15. Michell, G. (1988). *The Hindu Temple: An Introduction to Its Meaning and Forms*. University of Chicago Press.
16. Sharma, R. (2008). *Rajasthani Miniatures: The Magical World of Indian Painting*. Mapin Publishing.
17. Randhawa, M. S. (1962). *Kangra Painting*. Publications Division, Government of India.
18. Kossak, S., & McInerney, T. (2008). *Indian Court Painting, 16th–19th Century*. The Metropolitan Museum of Art.
19. Zimmer, H. (1951). *Myths and Symbols in Indian Art and Civilization*. Princeton University Press.
20. Brown, R. (1991). *Ganesh: Studies of an Asian God*. SUNY Press.